Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 12, (2017) 133-135

अद्भुत कलाविद् धरणीधर चन्दोलाः

जयजीत बड़थ्वाल[1]* एवं देवेश्वरी काला

[1]इतिहास विभाग हे0न0ब0गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

[2] वी0एड0 विभाग हे0न0ब0गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

*Corresponding Author Email: barthwaljaijeet@gmail.com

Received: 06.07.2017; Revised: 22.08.2017; Accepted: 20.11.2017
©Society for Himalayan Action Research and Development

सारांश: प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से उत्तराखण्ड के एक प्रमुख कलाविद धरणीधर चन्दोला की कला निधी का सक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

कुंजी शब्द: धरणीधर चन्दोला,चित्रकला,सरोद,सितार,विचित्र वीणा

प्रस्तावना:

प्रस्तावना चित्रकला भावना एवं अनुभुति की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है गढवाल में चित्रकला शैली का अपना एक इतिहास रहा है जिसमें इतिहास के शोधार्थियो द्वारा श्री श्यामदास तथा उनके वंशजो को अग्रणी माना है (यशवंत सिहं कटौच 1986) प्रस्तुत शोध पत्र में पौडी गढवाल में जन्में एक अद्भुत कलाकार श्री धरणीधर चन्दोला की कला प्रतिमा का वर्णन प्रस्तुत किया गया है ।

धरणीधर चन्दोला का जन्म पैाड़ी के निकट चन्दोला रांई गांव में हुआ था। पिता नारायण दत्त चन्दोला पेशे से शिक्षक थे तथा उनकी कला में गहरी रूचि थी साथ ही शास्त्रीय संगीत के अच्छे ज्ञाता थे। धरणीधर में भी संगीत तथा चित्रकारी के प्रति गहरी अभिरूचि बाल्यकाल से ही उत्पन हो गयी थी। चोपड़ा से प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात गवर्नमेंट स्कूल ऑपफ आर्ट एण्ड क्राफ्टस लखनऊ से फाइन आर्ट में पाचं वर्षीय डिप्लोमा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। शिक्षण के दौरान उनकी नैसर्गिक कला प्रतिभा से उनके शिक्षक भी प्रभावित हुए। विद्यार्थी जीवन में ही धरणीधर प्रसंशा बटोरने वाले चित्र बनाने लगे। आगे चलकर और भी स्वाध्याय तथा अभ्यास के द्वारा वह अपनी चित्रकारी में और अधिकं भाव तथा सौन्दर्य भरने में सफल हुए तथा शीघ्र ही उनके प्रशंसको तथा चाहने वालों का एक वर्ग बन गया। उनके प्रशंसको में सबसे पहला नाम तो महाराजा बुशेर का ही आयेगा जिन्होने अपने संग्रह में धरणीधर के बहुत से चित्रों को स्थान दिया। उनका चित्र नल– दमयन्ती छतरपुर के महाराज द्वारा खरीदा गया। महाराजा जुब्बल, नवाब पटौदी, महाराजा टिहरी, महाराजा बूंदी, महाराजा विलासपुर तथा नेपाल सरकार के संग्रहालय में उनके चित्र आज भी मिलते हैं। हिन्दुस्तान के बाहर मैक्सिको, नीदरलैण्ड, बेल्जियम, स्विटजरलैण्ड, इग्लैण्ड, अमेरिका, कनाडा, ब्राजील,फ्रांस के कला प्रेमियों के पास श्री चन्दोला के चित्र सुरक्षित हैं इनके चित्रों की प्रदर्शनी सर्वप्रथम दिल्ली के टाउन हॉल में लगी। यहां इन्होने प्राकृतिक सौन्दर्य तथा पर्वतीय परिवेश पर बनाये गये अपने चित्र पहली बार प्रदर्शित किये। इनके चित्रों की दूसरी प्रदर्शनी 9 से 13 अप्रेल 1953 को फ्री मेसन्स हॉल, नई दिल्ली में अमरीकी दूतावास द्वारा आयोजित कराई गयी थी। इसमें प्रदर्शित क्राउन ऑफ हिमालयाज़, ग्लिम्पसेस फ्राम पौड़ी, चौखम्बा फ्राम लैन्सडाउन, मदर एण्ड चाइल्ड, डीमिंग पोयट आदि चित्रों ने खासी प्रशंसा बटोरी। इनकी अन्तिम प्रदर्शनी 20 से 23 जनवरी 1976 तक अशोका होटल दिल्ली के प्रदर्शनी कक्ष में लगी थी जिसका उद्घाटन तत्कालीन स्वास्थ्य एवं परिवार

धरणीधर के चित्रों का मुख्य विषय वस्तुतः हिमालय तथा हिमालयी परिवेश ही हैं, उन्होने प्रमुखतः हिमालयी संस्कृति तथा लोक जीवन को अपने चित्रों का विषय बनाया। उनका बनाया बद्दी–बदेण का चित्र अत्यन्त जीवन्त बन पड़ा है। उनके ऋतु चित्रण में नारी के भिन्न भिन्न भावों के रूप में ऋतुओं को दिखाया गया है। पौड़ी से दृष्टिगोचर हिमालय श्रृंखला तथा चौखम्बा आदि चोटियों के अनेक सुन्दर चित्र धरणीधर द्वारा बनाये गये। चौखम्बा उन्हे विशेष प्रिय था, उन्होने चौखम्बा के भिन्न भिन्न कोंणों से चित्र चित्रित किये थे। साथ ही पौड़ी से दृष्टिगोचर होने वाली हिमालयी श्रृंखला के दिन के भिन्न भिन्न प्रहरों में सूर्य के प्रकाश के अलग अलग प्रभाव में भिन्न आभा प्रकट करते हुए अनेक चित्रों का सृजन किया था। उनका चौखम्बा फ्रौम लैन्सडाउन चित्र भी खासा चर्चित हुआ था।

पोर्टेट चित्रण में भी धरणी अत्यन्त कुषल थे, उनके पोर्टेटस की सजीवता देखते ही बनती है। जिला परिषद भवन पौड़ी में लगा हुआ चन्द्रसिंह गढ़वाली का चित्र धरणीधर चन्दोला द्वारा ही निर्मित है। धरणीधर के चित्रों की रगं संयोजना ग़जब की होती थी। पांरपरिक रंग प्रचलन से हटकर कभी कभी वह रगं संयोजन पर बिल्कुल नवीन प्रयोग करते तथा वह इतना सटीक होता कि विषय के साथ आत्मसात हो जाया करता। भारत के अनेक महत्वपूर्ण लोगों ने उनकी कला को सराहा था तथा अनेक विश्व व्यक्तित्व उनकी कला से परिचित थे। 1953 की उनकी प्रदर्शनी के अवसर को देश के प्रमुख समाचार पत्रों हिन्दुस्तान टाइम्स, स्टेट्समैन, इंडियन एक्सप्रैस आदि ने उनकी चित्र प्रदर्शनी के समाचार को स्थान दिया तथा उनके लैंडस्केप्स की विशेष चर्चा की। 1964 के प्रसंशा पत्र में उपराष्ट्रति डा0 जाकिर हुसैन ने उनके चित्रों में दिखाये गये गढ़वाली चेहरों को सराहा है तथा हिमालयी वातावरण को सफलता पूर्वक अपनी चित्रकारी में उतार देने की उनकी प्रतिभा की प्रशंसा की है। धरणीधर की बहुआयामी प्रतिभा चित्रकारी पर आकर ही रूक जाने वाली नहीं थी। उन्होंने पिता से संगीत की समझ पायी थी तथा लखनऊ में अध्ययन के दौरान उन्होने संगीत के अपने ज्ञान में भी निरंतर बढ़ोतरी कीं । वे संगीत का अभ्यास भी करते रहे तथा संगीत के पारखियों तथा उस्तादों से कुछ हासिल करने का कोई भी अवसर वो हाथ से नही जाने देते। बड़े उस्तादों के प्रोग्राम या म्यूजिकल कॉन्फेस सुनने के लिये वे देश में कोने कोने में पहुचते थे। यही नहीं उन्होने भारत के भिन्न भिन्न संगीत धरानों की मौसी के भेद को भी गहराई से समझा तथा किस धराने की क्या विशेषतायें दूसरे से भिन्न हैं तथा कौन सा धराना किस विशेषता के लिये जाना जाता है आदि संगीत के अनेक विषयों पर वह घण्टों चर्चा कर सकते थे तथा गा कर अथवा वाद्य पर बजाकर व्यहारिक रूप से इन बातों को बड़े सुन्दर तरीके से समझा सकते थे।

अनगिनत रागों पर उनकी गहरी पकड़ थी वे गायन के अतिरिक्त सरोद, सितार तथा वायलिन वादन बखूबी कर लेते थे। उनका वायलिन वादन दिल्ली आकाषवाणी से प्रसारित हुआ था। अपने समय के कुछ बड़े उस्तादों से उनका परिचय था। आगे चलकर उन्होने एक अत्यन्त जटिल योजना पर कार्य करना प्रारम्भ किया । उनका विचार हुआ कि क्यों न एक ऐसा वाद्य हो जिस के वादन से सितार तथा सरोद दोनो ही वाद्यों के संगीत का रसास्वादन किया जा सके और वह इस योजना पर कार्य करने लगे। इसके लिये उन्होने जापानी बैन्जो टाशीकीटो को चुना तथा उक्त वाद्य पर सितार तथा सरोद के तारों को खूबसूरती से जोड़ा , तीस वर्षों से भी अधिक समय तक वे इस अनूठे शोध पर लगे रहे तथा उन्होने इस वाद्य को वादित करने की विधि विकसित की तथा सौ से भी अधिक रागों की स्वरलिपियों का निर्माण अपने नवीन वाद्य के अनुसार कर लिया था। नवीन वाद्य को विचित्रबेला का नाम दिया गया तथा जीवन के अन्तिम समय तक वह विचित्र बेला के लिये स्वरलिपियों का निर्माण करते रहे। समय साध्य इस पुनीत कार्य के लिये उन्होने किसी भी सरकारी सहायता की याचना कभी नहीं की जबकि अपने समय के चोटी के राजनेताओं से उनका परिचय तथा घनिष्टता थी। अपने सीमित साधनों के बलबूते चन्दोला रांई स्थित अपने निवास पर धरणीधर ने लम्बे समय तक अपनी शोधयात्रा को जारी रखा। विचित्रबेला के व्यावहारिक प्रदर्षन के लिये धरणीधर ने अपनी पुत्री मालश्री को इस वाद्य के वादन में प्रशिक्षित किया। मालश्री अनेक रागों को विचित्रबेला पर अधिकार पूर्वक बजा लेती हैं तथा अनेक कार्यक्रमों में शिरकत कर प्रस्तुति दे चुकी है। अपने सीमित साधनों तथा अस्वस्थता के चलते धरणीधर इस वाद्य का जिस पर कि उन्होने तीस वर्षो से भी अधिक समय लगाया था पंजीकरण न करा सके और ना ही इसका समुचित प्रसार ही कर सके तथा ना ही लोगों को इसमें प्रशिक्षित कर सके। विचित्रबेला का एक मात्र ही पीस है जो उनकी पुत्री मालश्री के पास है, एक मात्र वह ही अभी तक इसको वादित करना भी जानती हैं। आवश्यकता इस वाद्य को पंजीकृत कराने की तथा इसमें अन्य प्रशिक्षुओं को भी तैयार करने की है। इस वाद्य पर संगीत सुनना वास्तव में बड़े ही

सुन्दर अनुभव के समान है। इसके पंजीकरण तथा षिक्षा के लिये सरकार अथवा किसी कला संगठन को आगे आना चाहिये वरना एक कला साधक के तीस वर्शों से भी अधिक की साधना एक दिन शून्य में विलीन हो जायेगी।

अस्वस्थता के बावजूद यह कलाधर्मी जीवन के अन्तिम दौर में भी निरन्तर कला के प्रति समर्पित रहा तथा विचित्रबेला के लिये स्वरलिपियों को निर्मित करता रहा और हिमालय तथा प्रकृति के चित्र बनाता रहा। धरणीधर के राईं गांव स्थित निवास जो कि वर्शो से बन्द पड़ा है, में यत्र तत्र उनकी बनाई हुई स्वरलिपियां बिखरी पड़ी हैं। हिमालयी पर्वत श्रंखला के कुछ एक आधे अघूरे चित्र भी लेखक को उनके निवास पर मिले तथा देशी–विदेशी रंगों के डिब्बे तथा कूचियां। सन 1979 में धरणीधर को पैरलिसिस हो गया था। अस्वस्थता के बावजूद जीवन के अन्तिम क्षणों तक सरस्वती का वह वरद पुत्र कला साधना में लगा रहा।

सन्दर्भ:

यशवन्त कटौच (1986): गढवाल चित्रशैली, वैरिस्टर मुकुन्दीलाल स्मृति ग्रन्थ, श्रीनगर गढवाल

****